नव अंशु

अमित मिश्र

श्रुति प्रकाशन

ISBN : 978-93-80538-82-2

मूल्य : भा. रू. २००/-
संस्करण : २०१२

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.
दूरभाष- (०११) २५८८९६५६-५८
फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :Pallavi Distributors, Ward no-6, Nirmali (Supaul).
मो.- ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Nav Anshu: A collection of Maithili Ghazal, Hazal and Rubai by Amit Mishra

अनुक्रम

भूमिका

गजल मने प्रेम, गजल मने दर्द मुदा एखन गजल प्रेम-विरहसँ आगू बढ़ि समाजक सब कोणमे अपन पएर पसारि रहल अछि। हिन्दी वा उर्दूमे गजलक इतिहास पुरान अछि मुदा मैथिलीमे गजल एकदम नव अछि। जहिना नव पानिमे तीव्र प्रवाह होइ छै ओहिना मैथिली गजल द्रुत वेगसँ समाजमे पसरि रहल अछि एकर प्रत्यक्ष प्रमाण फेसबुकक "विदेह" ग्रुप आ अनचिन्हार आखर ब्लाग http://anchinharakharkolkata.blogspot.com पर देखबाले भेटैत अछि । ऑनलाइन पत्रिकाक संग-संग प्रिंट पत्रिका सभ सेहो अपन सभ अंकमे गजल कैँ स्थान दऽ रहल अछि। गजलक बारेमे जँ कने जानकारी भऽ जाएत तँ हमरो लिखैमे नीक लागत आ अहूँकैँ पढ़ैमे मोन लागत। तँ चलू देखै छी मैथिलीक गजल की छै?

मूल रूपसँ गीत आ गजल सहोदर भाइ छै। मैथिलीमे गीत बहुत पहिलेसँ गाओल जाइत रहल अछि तेँ ई बड़का भाइ भेल आ गजल एखन जुआन भऽ रहल अछि तेँ ई छोटका भाइ भेल। आब हम अपन ऐ कथनकैँ प्रमाणित करै छी। गजल आ गीतमे अंतर की छै? मात्र एक अक्षरक। गीत आ गजल दुनू गाओल जाइ छै जँ ध्वनिक तुक {राइम्स } सभ पाँतिमे मिलैत रहत तँ गीत वा गजल दुनू सुनैमे बेशी नीक लागै छै। मुदा गीतमे राइम्स नहियो हेतै तँ चलतै मुदा गजलमे प्राय: पाँति संख्या 1, 2, आ तकरा बाद 4, 6, 8, 10 . . . मे हेबाक चाही।

गीतमे कतेको पाँतिक बाद फेरसँ मुखरा दोहराओल जाइ छै मुदा गजलमे प्राय: तुकान्तबला पाँति बादमे कहल जाइ छै। गजल कमसँ कम 10 टा पाँतिक होइ छै जकरा 2-2 पाँति क रूपमे बाँटि कऽ शेर कहल जाइ छै। जहिना गीतक शास्त्र व्याकरण होइ छै {सा रे ग . . .} तहिना गजलक व्याकरण होइ छै।

जहिना शास्त्रीय गायनमे राग होइ छै तहिना गजलमे बहर होइ छै। जहिना गीत कोनो ने कोनो ताल-रागमे होइ छै तहिना गजल कोनो ने कोनो बहरमे

होइ छै। आजुक जमानामे तेज धुन आ डी.जे. गीत गाओल जाइ छै। जहिना गीतमे कोनो तरहक चिन्हक {अर्द्ध-विराम, पूर्ण विराम आदि} कैँ मोजरे नै दै छथि, ओहिना गजलमे कोना पाँतिमे कोनो चिन्ह {. , ? आदि} नै देल जाइ छै। आब एना किए कएल जाइ छै से नै पूछू? अपने सोचू ने, गीते जकाँ गजलोकेँ तँ गाओल जाइ छै। जहिना गीतक कोनो शीर्षक नै होइ छै तहिना गजलक कोनो शीर्षक नै होइ छै। गीत कैँ "भक्ति, प्रेम, विरह, देशभक्तिऽऽ आदि रूपमे बाँटल गेलैए आ गजलोकेँ "गजल, बाल गजल आ हजल" क रूपमे बाँटल गेलैए।

गजलक बारेमे बेशी जानकारी आशीष अनचिन्हार जीक लिखल पोथी "अनचिन्हार आखर" वा ब्लाग http://anchinharakharkolkata.blogspot.com" पर भेटि जाएत।

गजलमे आबैबला किछु शब्दकेँ देखू।

1} शेर- शेर दू पाँतिक होइत अछि आ अपना आपमे सदिखन पूर्ण भाव दै अछि आ आन पाँतिसँ स्वतंत्र रहैत अछि।

2} गजल- कमसँ कम पाँच टा शेरके जँ किछु तुकान्तक संग एक ठाम राखल जाए तँ ओ गजल बनै छै। एकटा गजलमे एकै रंग तुकान्त हेबाक चाही।

3} रदीफ- गजलक पहिल शेरक अंतिमसँ देखू, जँ कोनो एहन शब्द जे शेरक दूनु पाँतिमे कॉमन होइ तँ ओकरा गजलक रदीफ कहबै।

आइ चलू संगे प्रेम गीत गेबै प्रिय
एकटा प्रेमक महल बनेबै प्रिय

एहि शेरमे "प्रिय "दुनू पाँतिमे अछि तँ एकर रदीफ भेल "प्रिय"। आब गजलक सभ शेरक दोसर पाँतिमे ई रदीफ रहबाक चाही, से अनिवार्य अछि।

4} काफिया - काफिया मने मोटा मोटी तुकान्त {राइम्स} बुझू। जँ बाजैमे एकै रंग ध्वनि बुझना जाइए तँ ओ भेल काफिया। काफियाक तुक ओइ शब्दक अंतिम सँ पता लागै छै। जे तुकान्त गजलक पहिल पाँतिमे अछि सएह आन सभ पाँतिमे हेबाक चाही। मतलब जे गजलक पहिल शेरक दुनू पाँतिमे आ आन शेरक दोसर पाँतिमे।

काफिया- गमला. राधा. चेरा. केरा {ऐ मे तुकान्त "आ" भेल}

हेतै, खेबै, झेलै {ऐ मे तुकान्त"ऐ" भेल}

रोटी, हाथी, रेती {ऐ मे "ई" भेल}
झोरी, बोरी {ऐ मे"ओरी" भेल}
एनाहिते अओर सभमे काफिया {तुकान्त } बनत।

गजलक पहिल शेरमे रदीफ आ काफिया क्रमश: पाँतिक अंतिमसँ अनिवार्य रूपसँ हेबाक चाही। आ आन शेरक दोसर पाँतिमे सेहो रदीफ आ काफिया क्रमश: अंतिम सँ हएत।
5} मतला- गजलक पहिल शेर जेकर दुनू पाँतिमे रदीफ आ काफिया क्रमश: अंतिमसँ होइ एकरा मतला कहल जेतै।

चाँद देखलौ तँ सितारा की देखब
अन्हारक रूप दोबारा की देखब

प्रेमक सागरमे बड नीक लागै
डुबऽ चाहै छी तँ किनारा की देखब

ऐ मे पहिल शेरक दुनू पाँतिमे कॉमन "की देखब" अछि तँ ई ऐ गजलक रदीफ भेल आ रदीफक पहिले देखू, दुनू पाँतिमे "सितारा "आ "दोबारा " छै एकर तुकान्त भेल "आरा" तँ ई भेल काफिया। आब दोसर शेरक दोसर पाँतिमे देखू। रदीफ "की देखब" आ तुकान्त "आरा " क संग शब्द "किनारा " अछि। आब ऐ गजलक सभ शेरक दोसर पाँतिमे अंतसँ रदीफ "की देखब" आ काफिया "आरा" तुकान्तक संग हेबाक चाही।
तुकान्तक पाता शब्दक अंतसँ चलै छै।
6} मकता-- गजलक अंतिम शेर जैमे शाइर अपन नामक प्रयोग करै छथि ओइ गजलक मकता कहल जाइ छै।

मेघक डरे चान नै बहरायल

नै औता अमित नजारा की देखब

ई भेल मकता ।

शाइर अपन एकै टा नामक प्रयोग करथि। जेना हम पहिल गजल सँ"अमित" लिखै छी तँ आब कतौ "मिश्र " नै लिख सकै छी। बहरक पहिचान लेल हम U मने " ह्रस्व " लेने छी आ । मने दीर्घ लेने छी।

हम लिखैत तँ 2008 सँ छी मुदा मास जनवरी 2012 क अंतिम सप्ताह मे श्री आशीष अनचिन्हार जी सन गुरू भेटलनि, संगे विदेह सन प्लेटफार्म भेटल तँ हम ऐ दिनकेँ अपना लेल नव जागरण मानैत छी। हमर एकटा इस्कूल संगी जे पहिल बेर लिखबाक साहस देलनि, श्री आशीष अनचिन्हार जी {हमर गजल गुरू} जे गजलक ज्ञान आ "अनचिन्हार आखर" मे जगह देलनि, श्री गजेन्द्र ठाकुर जी जे विदेह -मैथिलीक अन्तर्राष्ट्रिय आनलाइन पत्रिका {www.videha.co.in } मे जगह दऽ लिखबाक साहस देलनि, श्री ओम प्रकाश झा जी जे बेर-बेर हमर गजल यात्रामे मदति केलनि, ,हिनका सभकेँ हम कहियो नै बिसरि सकै छी। संगे संग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपसँ संग देबऽ बला सभ गोटेक संग सभ पाठकगणक जीवन भरि आभारी रहब।

एकटा गजल पुष्प अपने सबहक लेल:-

पुष्प गजलक लऽ एलौँ प्रेम आँगनमे
शब्दके घोरि एलौँ नेह चाननमे

नव सिनेहक सजल मधुमासमे रमलौँ
भासलौँ हम कतौ दुख विरह सावनमे

नव समाजक लऽ ऐना देखलौँ मुँहके
भूतिया गेल सब संस्कृतिक बासनमे

मंद मुस्की हजल के संग बड हँसलौँ

बाल छी बनल हम कखनो कऽ गायनमे

अमित आशीष चाही मात्र हमरा यौ
भाव रस रहब भरि सदिखन समर्पणमे

अपनेक सुझाबक बाट जोहैत हम-

-अमित मिश्र

गजल

1

चान देखलौ तँ सितारा की देखब
अन्हारक रूप दोबारा की देखब

प्रेमक सागर मे बड़ मोन लागै
डुबऽ चाहै छी तँ किनारा की देखब

एहि ठामक मिठाइसँ बेसी मीठ
रूपक छाल्ही कँे दोबारा की देखब

अपने आप राति रंगीन भऽ जाए
फेर बोतलक इशारा की देखब

मेघक डरे चान नै बहरायल
ओ नै औता तँ नजारा की देखब

जखन यादिक सहारे जी सकै छी
तखन चानक सहारा की देखब

वर्ण -13

2

जे किछु कहब हँसि कऽ कहू
प्रेमक जालमे फँसि कऽ कहू

भीज जाउ सिनेहक वर्षा मे
दिलक झीलमे धँसि कऽ कहू

खसा दिअ आइ बिजुरी अहाँ
रूपक चानन घसि कऽ कहू

प्रेम केलौँ कोनो पाप तँ नै ने
लगमे आबि हुलसि कऽ कहू

जमाना जुल्मी किछु नै करतै
डरू नै बाँहिमे कसि कऽ कहू

अन्हरिया कते दिन रहतै
देखू भोर भेलै हँसि कऽ कहू

बना लेब दुलहिन अप्पन
अमित कने खखसि कऽ कहू
वर्ण -11

3

कोना चमकल रूप सब बूझहऽ चाहै छै
अंग-अंग मे हम्मर गजल रहऽ चाहै छै

केशक गजरा जानि नै की सब करेतै यै
मुस्की कए वाण पर करेज ढहऽ चाहै छै

पएरक पायल मोनक मोर नचाबै यै
डाँरक लचकी कए बिजुरी सहऽ चाहै छै

पाकल आम छी हरियर-पियर सुटमे
प्रेमक मथनी सँ प्रेम दही महऽ चाहै छै

राति अमावस मे पुनिम बनि कऽ एलौँ यै
चलि आउ मोर अंगना दिल कहऽ चाहै छै

परी बनि सपना मे सबहक त आबै छी
"अमित " तऽ सिदखन सुतले रहऽ चाहै छै

वर्ण - 16

4

आँचर तर मरबाक मजा किछु और छै
संग प्रेम मे भिजबाक मजा किछु और छै

सुतल मे त श्वप्नपरी बड यादि आबै छै
जागल श्वप्न देखबाक मजा किछु और छै

गीत-संगीत त ताले सँ बान्हल रहै छैक
बीन ताल के नचबाक मजा किछु और छै

गणित विज्ञान हिन्दी भुगोल बड सिखलौ
प्रेमक पाठ पढ़बाक मजा किछु और छै

फूल भरल बाट पर कतबो चलु अहाँ
कांट पर में चलबाक मजा किछु और छै

जमाना तेज छै क्षण में पहुंचू सब ठाम
इंतजार में रहबाक मजा किछु और छै

अनचिन्हार देलनि पांति बनल गजल
अमित संग लिखबाक मजा किछु और छै.

वर्ण -- 16

5

आइ नोरसँ आँखि बोरि रहल छी
ककरो दिश मोन मोड़ि रहल छी

तेज श्वासक कोदारिसँ आइ हम
ओ इयादक माँटि कोरि रहल छी

तरेगणक बीच बैसल चानसँ
पहिले जकाँ डोर जोड़ि रहल छी

अन्हारक बीच कुकुरक आवाजसँ
रहि-रहि कऽ ध्यान तोड़ि रहल छी

कत्तौ- कत्तौ जुगनू चमकी उठै छै
नै एला प्रिय आश छोड़ि रहल छी

राति जुआन बुढ़ सब भेलै देखू
ओ औता विश्वास नै छोड़ि रहल छी

आइ नै तँ काल्हि जरूर औता प्रिय
यैह सोचि ओछेना छोड़ि रहल छी

वर्ण --13

6

आब तँ राति बिताएब भेल कठिन
वर्षा मे वस्त्र सुखाएब भेल कठिन

दिन तँ भीड़ मे हसैत बित जाइ छै
राति कऽ दर्द नुकाएब भेल कठिन

सब ठाम चोरी-डकैती जोर धेने छै
प्रेमक धन बचाएब भेल कठिन

यार सब छलैए तँ ताश खेलै छलौँ
पहिला यादि मिटाएब भेल कठिन

माँ-बाबू कनियाँ बच्चा भाएक चिन्ता छै
आब सब लेल खाएब भेल कठिन

अनचिन्हार चिन्हार सब छितरा गेल
संबंधक पुल बनाएब भेल कठिन

धधैक रहल पानिमे धधरा देखू
अमित आगि मिझाएब भेल कठिन

वर्ण --14

7

करेजमे जनमल घाव तँ जडिएबे करै छै
भिजल रूइया कए बोझहा भरिएबे करै छै

जीवन दुखक सागर अछि सब केउ जानै छी
हिम्मत राखू तँ सुख फेर सँ सरिएबे करै छै

कऽ लिअ कतबो झुठक खेती बेइमानी डकैती
भगवान घर मे तँ हिसाब फरिएबे करै छै

अनकर कन्हा पर बंदुक राखि चलाबै सब
केउ नीक बात नै कहै सब गरिएबे करै छै

बाप-दादा कए इज्जत निलाम जुनी करै जाउ
सदिखन बदनाम लोक त' भरियेबे करै छै

जहिना गजल नीक लिखबाक कोशिश रहै छै
"अमित" विद्वान लोक समाज सरियेबे करै छै
वर्ण --18

8

रातिमे हुनकर इयादि आबैए बेसी
रातिमे बाट जोहैत आँखि जागैए बेसी

कतबो प्रकृतिक कोरामे रहब मुदा
खण्डहर सिनेहक नीक लागैए बेसी

माँ कए चिन्ता जेना संतान लेल होइ छै
खून नै देह-देहसँ चिन्ता बहैए बेसी

गामक टूटल टाट दोगसँ देखैत ओ
पहिलुक मिलनक बात दागैए बेसी

कोना-कोना कोहबर सँ कलकत्ता एलौँ
रूकबो नै करै फिल्म जेकाँ भागैए बेसी

विरहक वेदना झुलसा देलक आत्मा
घुरो सँ अमित करेज सुनगैए बेसी
वर्ण --15

9

हरियाली देख हरियर मोन भऽ जाइ यै
बंजर धरा देख बज्जर मोन भऽ जाइ यै

जँ आमक गाछी मे एक्को मिनट बिताएब
मीठ पवन सँ मिठगर मोन भऽ जाइ यै

जँ खेत मे देखै छी झुमैत गहूँमक बालि
सरसोँ फूल सँ रसगर मोन भऽ जाइ यै

घरक आगू गुलाबक उपवन सजेलौँ
आब एत्तै करब गुजर मोन भऽ जाइ यै

लोभी लोक लाजो नै करै छथि गाछ काटि कऽ
देख कऽ अमित गड़बड़ मोन भऽ जाइ यै

वर्ण--16

10

गोर गाल पातर ठोर छै
नैन कारी बड़ बेजोर छै

नाक कान डाँर केश नीक
यौवन झरनाक शोर छै

गुलाब कही त बड़ कम
दोसर ठामक इजोर छै

विरह जँ अन्हरिया छै तऽ
इ प्रेमक मधुर भोर छै

जीवन जँ नरक भेलै तऽ
स्वर्ग नगर कए डोर छै

मोन मोहै छै मशीन आइ
मुदा इ पैघ चितचोर छै

होली मे रंगक मेल जेकाँ
सबसँ मिलबाक होर छै

चीख हिनक प्रेमक स्वाद
अमित तऽ भेल विभोर छै

वर्ण --10

11

बिन हुनका देखने मोन ने मानए
जँ देख ली तँ ककरो होश ने आनए

सबसँ बड़का नशेरी पकैड़ लाऊ
ऊहो हारत जँ दारू नैनसँ छानए

पियर सरिसोँ फूलक हँसी लोभाबै
हिनक मुस्कीसँ बाधो मस्त भऽ फानए

डाँरक लचकी ,चाल सुनू अल्हर छै
रूप सँ छिटकल इजोर चान आनए

जँ खोलि देती माँथ परक उपवन
बर्षो एहि ठाँ बसबाक लेल ठानए

सच कही तँ उच्च ताप पर तपल
अनमोल सोना .जे सब चाहै किनए

सच कही तँ उच्च ताप पर तपल
अनमोल सोना जे सब चाहै आनए

वर्ण --14

12

देहमे सटलै जखन देह सिहरि गेलै देह
देह किएक आइ देहे देख हहरि गेलै देह

दैवक सबसँ नीक रचना मनुष्यक देह छै
अनेको उपमासँ सजल से उघरि गेलै देह

नव दुनियाँमे चलैत-फिरैत मशीन छै लोक
मानवता प्रेम भाइ-चारा बला मरि गेलै देह

गोर-कारी छोट-पैघ लिंगक नाम पर बाँटल
अमित आब कहिया सुनब सुधरि गेलै देह
एकाएक बसंतक हमला भेलै मौसमपर
नव पात भरल गाछ जेकाँ मजरि गेलै देह

श्वासमे तेजी खूनक प्रवाह बढ़ि गेलै पलमे
लड़ाइमे ज्ञानी पुरूष जेकाँ सम्हरि गेलै देह

वर्ण --18

13

करेजक पहचान छै मोछ
हिम्मत कए चलान छै मोछ

मौगी जेकाँ जुनि बनू यौ भैया
सब मर्द कए शान छै मोछ

बिन टिक कए जुनि रहू यौ
टिक मनुखक गुमान छै मोछ ,

संस्कार पड़ल जनेऊ भेलै
जनेऊ सब के प्राण छै मोछ

नै सोचु बेरोजगार रहब
सबहक तऽ सम्मान छै मोछ ,

मोछ राखब खराप बात नै ,
नव संस्कृति सँ मिलान छै मोछ

वर्ण --11

14

की भाइ, किछु लिखै छी तऽ गजल लिखू
धुन-ताल कए फूलसँ बान्हल लिखू

प्रेम करै छी बड अहाँ आ शाइरी नै
प्रेम प्रगाढ़ हेएत पल-पल लिखू

खुशी- गम संग सब रंग समाजक
धोरि एक्के घैलामे ताड़क जल लिखू

कल्पना कते दिन टिकतै मोनसँ लिखू
गामक हवामे साँस लऽ गजल लिखू

सबहक मोनमे उठै नव तरंग
फाग रंग-अबिर लगा अटल लिखू

बड भेल प्रेम आ शराबक गजल
समाज उत्थान लेल भऽ बेकल लिखू

किछु नव शीर्षक नव शब्द चुनि कऽ
अमित नव समाज मे रमल लिखू

वर्ण --14

15

गजलसँ परिचय करेलक अनचिन्हार आखर
गजलक अ आ इ ई सिखेलक अनचिन्हार आखर

भटकै छलौँ गीत आ कवितामे ओझरा हम कतेक
लिखबाक मकसद बतेलक अनचिन्हार आखर

साहित्यक रंगबिरही विधा मे एकटा गजलो छैक
दू पाँतिक भाव कहि सिखेलक अनचिन्हार आखर

आबि गजलक भंडारमे केओ गजल गाबऽ लागत
एगो अलगे दुनियाँ बसेलक अनचिन्हार आखर

जा धरि लिखब गजले टा लिखबाक कोशिश करब
अमित कए शाइर बनेलक अनचिन्हार आखर

वर्ण --20

16

जीवनमे एक्को बेर मान समाजक राखबै
अहाँ कखनो तऽ बाट हमर घरक धरबै

भुतीया गेलौँ बिहाड़ि शहर दिश जे चललै
धुमि उर्वर धरा पर पालो हऽरक धरबै

हम गाम छी ,हम संस्कृती छी , हम इज्जत छी
कखनो तs हमर जीर्ण देहक लेल सोचबै

सगरो अत्याचार ,सगरो लुट-पाट मचल छै
कहियो तs अपन सर्द खून गरम करबै

पैसा कारी-उज्जर , भोजन दुर्लभ भेल आइ
कखनो तs सत्यक मिझाईत घूर सुनगबै

पहिले केऊ चलत काफिला बनबे करतै
अमित कहिया कलममे क्रांति भरि लिखबै
वर्ण --17

17

अहाँ कखनो तऽ बाट हमर घरक धरबै
हमरा संगे अहूँ त बाट समाजक धरबै

भाग्यमे जे लिखल अछि तें विरहमे मरै छी
आशा केने छी कहियो तऽ मान नोरक धरबै

राहू-केतू केने अन्हरीया ताशक सियाह छी
हेतै जँ तेज मंगल तऽ ध्यान भोरक धरबै

काँट कलपाबैए कने काल कनेक दर्द दऽ
फूलो भेटबे करत बाट नै डरक धरबै

सिनेह जँ हारत तऽ समझू दुनियाँ डोलत
लड़ाइ जीत कहियो तऽ झण्डा प्यारक धरबै

ठार दलान पर स्वागतक थारी सजेने छी
माँग हमर राँगल हाथ सेनुरक धरबै

नै मागै छी अकाशक लाख तरेगण हम यौ
अमित कहियो तऽ गजल हजारक धरबै

वर्ण --17

देखि दुनियाक रंग हम दंग रहि गेलहु
नीक नहियों लागल रंग तैयो सहि गेलहु

बान्ह सँ बाहर निकलैत नवका पानि छलै
टुटल नाव तऽ संग छल तैयो दहि गेलहु

ताकत अछि एते चिर देब पहाड़क सीना
दुनियाँक विकराल रूप देख ढहि गेलहु

सगरो भूख गरीबी दर्दसँ ग्रसित छै सब
आ हम ए.सी मे रहितो रौदसँ डहि गेलहु

पैघ हेबाक होरमे इज्जत सब बिसरलै
अमित जाग आबो तऽ अपनेसँ कहि गेलहु

वर्ण --17

की अहाँ अपन संग देबै
की भरि जीवन संग देबै

सहबै बाढ़ि भुकंप .रौद
जखन-जखन संग देबै

निकलतै कलमसँ लावा
रचबै सुमन संग देबै

साहस तँ देहमे दौगैए
पुरतै सपन संग देबै

पुण्यक राज फेरसँ एतै
हो पाप हवन संग देबै

धरा पताल सब मिथिला
मैथिली गगन संग देबै

अहाँक संगे टा चाही प्रिय
अमित नयन* संग देबै

*हुनका अपन नयन मानि रहल छी एहि ठाम *
वर्ण --------10

बीत गेल होली आब कहिया एबै पिया
छुटल रंग कहिया रंग लगेबै पिया

असगर आश लगा ओझराएल छलौँ
निरास छी खुश कऽ कखन नचेबै पिया

यौवनक बिया अंकुरि गाछ बनि गेलै
कखन रूय फलक स्वाद बतेबै पिया

जाड़क ओछेना ,बसंतक पसेना राजा
गर्मीयोँ मे अकेले आगि सँ तपेबै पिया

डाह होइ यै देखि सहेलीक प्रेम सुख
काजे के पत्नी मानि सुधा बरसेबै पिया

देहक वस्त्र फसकि की सँ की भऽ गेलै यौ
फोन सँ बात कऽ और कते सिहेबै पिया

यौवन समय आ समुद्रक लहर छै
ठहरै नै छै गाड़ी कहिया बढ़ेबै पिया

प्रात आबू ने गाम रूपक रंग धेने छी
अमित हाथसँ प्रेम पुआ खुएबै पिया

वर्ण --15

21

बंद आँखिसँ होइ रचना
राति-दिन हुनके सपना

बोली फूल बरसै गमकै
प्रेम भरल घर अंगना

कैन्वासपर फोटो जेकाँ
आधा-अधुरा होइ सामना

कोनो रोक नै जोर चलैए
मात्र ओ कऽ सकै छथि मना

घुमै छी दोसर नगरमे
नैन मिलेने फाँकैत चना

कहै यै आलसी इ दुनियाँ
मात्र केलौँ हुनके रचना

सपना आ कल्पना अमित
राति -दिन हुनके सपना

वर्ण -- 10

राति कऽ जानि नै किए नीन नै होइ यै
कतबो टाकामे श्वप्न कीन नै होइ यै

जग फोँफ काटै हम करोट फेरै छी
दोसरोसँ मिठ सुख छीन नै होइ यै

अनंत अकास तरेगण पसरल
पुर्णिमामे अमावश मलीन नै होइ यै

प्रेयषी प्रेमक पता पलक पुछैए
पुनः पाबि पंक पथ नीन नै होइ यै

जिनगी जहल अपने लोक बनेलक
आब तऽ सुखल नोरो भीन नै होइ यै

कते कठिन छै किनब कतौ प्रेम
हमहुँ भिखमंगा देख घीन नै होइ यै

प्रेममे दर्द नीनक मेल नै होइ छै
अमित दुनू कहियो तीन नै होइ यै

वर्ण --14

23

टूटिए जेतै संबंध जँ दस लेल एकसँ इहो स्वीकार अछि
भीड़ मे जीबै छी तँ भीड़के बचेनाइ हमर व्यबहार अछि

हम बनियाँ छी सए कमा लेब दस छुटि गेल कोनो दुख नै
सबल तऽ बढ़बे करतै ओकरा संग दिअ जे लचार अछि

माछक लोभमे सड़ल माछ लऽ दुषित नै करब समाजके
एक दाममे बिकै बला ककरो जिनगी नै मीना बजार अछि

सब के सबसँ किछु-ने- किछु चाहत रहै छै छोट बाट पर
अहाँ एक बेर आबू हम दस बेर इ हमर व्यबहार अछि

लड़ाइ कऽ देह जुनि तोड़ै जाउ प्रेम कऽ दिल धरि पहुँचु यौ
अमित गिनती के फेरा मे नै पड़ू सगरो अपने संसार अछि
वर्ण-23

24

रातिं देखलौ सदियह तोर रूप गे चान हमर जान लऽ गेलैं
जान हमर लिखल तोरे नामे छलौ जान हमर प्राण लऽ गेलैं

पहिल चिन्नी मिला प्रेम के पानिसँ गाढ़ बनौलैं प्रेमके चाशनी
रंग-रूप यौवन राति चमका कऽ प्राण हमर इमान लऽ गेलैं

केलैं सुशोभित नेह उपवन रंग-बिरंगक तितली बनि कऽ
अनमोल पराग राति पिया कऽ गे चान हमर गुमान लऽ गेलैं

एहन आदत लागल जँ तोरा नै देखी मोन हमर नै लागैए
आँखि बन्नो मे तोरे तऽ हम ताकै छलौँ जान हमर मान लऽ गेलैं

आबि हकिकत मे एकबेर गाम गोरी हमरो तऽ मान राखि ले
अमित भटकैत मोन के सम्हारि कऽ मान हमर शान लऽ गेलैं

वर्ण-24

25

अ-आसँ सिखलौँ आखर जोड़ि गजल बनेनाइ
जेना कागजक नाह आ फूल कमल बनेनाइ

मतला रदीफ काफिया कसीदा शेर आ बहर
धुनसँ साजि कऽ रंगबिरही महल बनेनाइ

प्रेमिकाक आँचरसँ प्रेमक पाठ आ प्रेमालाप
कुहरैत करेजक दर्दके चंचल बनेनाइ

दिनके राति रातिके दिन साँझ-भोरसँ बदलि
मोनक भावके अनका लेल सरल बनेनाइ

जन्मदिनक ढेर रास बधाइ आ-आ के हमर
अमित अ-आ गंगा शेर के गंगाजल बनेनाइ
* अ-आ मने " अनचिन्हार आखर "

वर्ण-18

26

नव चान बैसल छै हमर कोहबरमे
सुन्नर मुँह नुकेने ओ अपन आँचरमे

एक कोण पर बैसल ओ लाले लाल लागै
ओ चुप छथि मुदा गाबै छी हम भीतरमे

नहूयेँ उठल घोघ मोन आनंदित भेल
जागल अथाह प्रेम मात्र एक नजरमे

नै मरलौँ नै जीलौँ बीचे मे रहि गेलौँ हम
पीब हुनकर स्पर्श सन मीठ जहरमे

सबदिन चान आबैए सजैए कोहबर
अमित आइ मागै छी जा ओ प्रेम नगरमे

वर्ण-16

27

डहकल करेज जड़ल करेज और जड़ाएब कोना
बीन डोरक पतंग अहाँ कहू और उड़ाएब कोना

जीवनक पर्दापर कतेक नव नव नाटक खेललौँ
जखन अन्हार भेल रंगमंच रचना रचाएब कोना

आँखिक सामने उजड़ि गेल बसल बसाएल दुनियाँ
आब भटकल बाट पर प्रेम नगर बसाएब कोना

की सही केलौँ आ की गलत केलौँ किछु नै जानि हम पेलौँ
जानै छी एतऽ बड भीड़ छै नैनसँ नोरो बहाएब कोना

खुशीसँ काटू जीवन खसैत पड़ैत काटि लेब हमहूँ
अमित आजुक राति बड भारी राति ई बिताएब कोना

वर्ण-21

28

दोसरक दर्द अपन बूझि जड़ि रहल छी हम
छी अपने समाजक तँ संग मरि रहल छी हम

कखनो हँसलौँ कखनो कानलौँ सब रंगमे रंगि
भऽ नै जाऊँ असफल तँ बड्ड डरि रहल छी हम

कोना बताएब खूनक एक एक ठोपक रहस्य
खूनक प्यासल बड्ड छै तँ हहरि रहल छी हम

नेह सगरो भेटि रहल छै खुले आम बजारमे
सीसा सन टूटल दिल जोड़ि तरि रहल छी हम

आइ देखलौँ दुनियाँ हम अपन खुलल आँखिसँ
अमित आइ बूझलौँ अनेरे जड़ि रहल छी हम

वर्ण-19

29

अहाँक रूप देख देख जीवन जी लै छी हम
मदिराएल नैन देख कऽ कने पी लै छी हम

ओना तऽ बड बड़बड़ाइत रहै छी सखरो
अहाँक ठोर खुलै यै तऽ अपन सी लै छी हम

अहाँ मक्खन अहाँक परतर कोना करब
दूर नै भऽ जाउँ अहाँ सँ तेँए दही लै छी हम

बात इ अलग जे जमाना कहै प्रेमी हमर
अहाँ तऽ जानै छी दर्द छोड़ि और की लै छी हम

सब सप्पत अहीँ के नामे अहीँ के नामे श्वास
प्राणो छै अहीँके नामे की ऐसँ बेसी लै छी हम

नव दिवस मे करू सजनी नवका गप्प यै
अमित अहाँ पर एकटा शाइरी लै छी हम

वर्ण-17

30

खूनसँ भिजलै धरती मिथिला बनबे करतै
कतबो घायल मैथिली मिथिला बनबे करतै

जानकीके छाती पर जे चोट लगलै आइ एतऽ
खून बनि जेतै चिनगी मिथिला बनबे करतै

चोटाहल साँप धऽ लै छै रौद्र भयानक रूपके
आब शेर गरजै बेशी मिथिला बनबे करतै

एकोटा शहीदके बलिदान नै हेतै व्यर्थ आब
पापीके मूँह हेतै कारी मिथिला बनबे करतै

जागू मिथिला एक जूट भऽ चलियौ छाती तानि कऽ
करियौ अमित तैयारी मिथिला बनबे करतै
वर्ण-18

31

धन आ ऋृण संगे जोड़ल तऽ जाइ छै
चिन्नी नोन पानिमे घोँटल   तऽ जाइ छै

जे कानैए से हँसबो जरूर करै छै
आम संग बबूर रोपल तऽ जाइ छै

जे काज केउ कहियो नै केलक एतऽ
विपति एला पर सोचल तऽ जाइ छै

नोर जड़ैए वा खून जड़ैए हर्ज की
कखनो कऽ माहुरो घोँटल तऽ जाइ छै

जँ लोढ़ी घसल कपार मे तऽ की भेल
अपनो सँ लकीर गोदल तऽ जाइ छै

डाह करब तऽ डहि जाएब अपने
डहकल करेज जोड़ल तऽ जाइ छै

पानि अपन बाट अपने बनबैए
इ चंचल धारा के मोड़ल तऽ जाइ छै

जँ कारी मायाजाल सँ मारै छै लोक के
ओ जादूए सँ मोन मोहल तऽ जाइ छै

सही आ गलत सब छै एहि जग मे
अमित गलत के टोकल तऽ जाइ छै
वर्ण-14
* एहि ठाम "धन" मनें"+ve" आ "ऋृण" मने "-ve "भेल

अपन अपनेके लड़बै छै
नेत अपने पर डोलबै छै

जे कानै छै देखार भऽ जग मे
हँसै वला के वैह कनबै छै

कलमक ताकत जुनि पूछू
हंगामा तऽ इएह करबै छै

जेकर मोन मे अहाँ बसलौं
करेजक खून ओ करबै छै

देखाइ नै दै छै जे सूक्ष्म जीव
बिमरियाह वैह बनबै छै

भरोसा करब ककरा पर
भरोसे वला होश उड़बै छै

नै चिन्हार छै जगमे अमित
कोसी माँ अपनेके दहबै छै

वर्ण- 11

अपन लोक मरखाह बनल छै यौ भैया
कुटमैती आब चोटाह बनल छै यौ भैया

जहर पीबि तेजै छै अपन प्राण अपने
जिनगी भमर अथाह बनल छै यौ भैया

नोर पोछत नै आब केओ ककरो कहियो
दोसरक हँसी कटाह बनल छै यौ भैया

प्रेम बनल आब एतऽ इतिहासक शब्द
करेजक छंद घबाह बनल छै यौ भैया

लूट मचल अछि चारू दिश इजोरियेमे
जन जनक डलबाह बनल छै यौ भैया

उबडूब करै छी संसारक बैतरणीमे
जिनगी तऽ फूटल नाह बनल छै यौ भैया

अपन शप्पत दऽ बनबै अपन दुश्मन
अमित शोणित सियाह बनल छै यौ भैया

वर्ण-16

ताड़ी के कने छानि कऽ दिअ
दारू कतौ सँ आनि कऽ दिअ

मर्दक छै पहचान दारू
आइ तऽ छाती तानि कऽ दिअ

डूबल छी जे मदहोशीमे
रम मे दुख सानि कऽ दिअ

बंधन इ दुनियाँके तोड़ू
सबटा बान्ह फानि कऽ दिअ

नैनक निशा बड़ड चढ़ल
ठोर सटा कऽ जानि कऽ दिअ

गिलास छोरू बोतल लाबू
अमित आइ हानि कऽ दिअ

वर्ण-10

35

शहरक सब शराबी चलू घर हमर
ओतै नशा के बसेबै नया नगर हमर

भऽ कऽ दुनियाँसँ अलग कने काल झूमब
क्षणेमे हरिया जेतै सुखल चर हमर

नदी नोरमे घोरब रंग बिरंगक पानि
कोनो इयादक चखना हेतै कर हमर

पिबै सँ पहिले मीता मुनि ले आँखि अपन
कहै नै इयाद नै केलौँ दिलबर हमर

खसै छी बीच्चे सड़क तऽ कहै शराबी सब
ओकरा हँसबै लेल खसै छै धर हमर

भऽ कऽ बदनाम अमित जी सकै छी हम त
कहत हरजाइ तऽ जड़त घर हमर

वर्ण--16

हम बाजि रहल छी मायक कोखिसँ
हम सबटा सुनै छी बेशक कोखिसँ

कष्ट सहब हमर नियती बनल
मल- मुत्र खून सहै छी मायक कोखिसँ

मारि देब पहिल तीन बहिन जेकाँ
सुनि हँसि रहल छी मायक कोखिसँ

बेटी कए जौ मारबै यौ भलमानुष
बेटा जनमत कोन मायक कोखिसँ

हम बेटी छी दुर्गा छी सुनि लिअ अहाँ
आइ हुंकार भरै छी मायक कोखिसँ

बेटी कए जे केउ सम्मान नै करत
नै जनमऽ चाहब ओ मायक कोखिसँ

बेटी बिन बंश ककरो तऽ नै बढ़तै
जारि कऽ बंश मरै छी मायक कोखिसँ

वर्ण 14

37

गजल नै नै गीत लिखलौँ
जँ लिखलौँ तऽ प्रीत लिखलौँ

दरद सीमा पार केलक
तऽ मरहम घसि मीत लिखलौँ

उलट बातसँ नीक लागै
गरम के हम शीत लिखलौँ

बयानसँ पलटब तऽ इज्जत
जँ नेता सन गीत लिखलौँ

बरसबै नै मेघ बनबै
ढहल आँगन भीत लिखलौँ

बहू सासुक भेल झगड़ा
मधुर संगे तीत लिखलौँ

बचब नै यौ प्रलय हेतै
फँसल साँसक जीत लिखलौँ

अमित देखल अपन नैनसँ
समाजक सब रीत लिखलौँ

मफाईलुन-फाइलातुन (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ + दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ सँ बनल बहरे-मजरिअ)

फुलल फूलक आशमे भेटल कटैया
इ मधुमासक समयमे पतझड़ समैया

तड़प भेटत मात्र फँसलौँ यदि मरूस्थल
बनल छै मारूक एहन घर घरैया

जड़ल मानव नेह मे दुख मीत दै छै
पियासल छै खूनके सब मन वनैया

खसल छै अर्थव्यवस्था सड़ल सोँगर
अपन पेटक भूख बनि गेलै बलैया

दऽ रहलै यै दोष सऽब पर सऽब नगर मे
दऽ रहलै केओ तऽ ककरो नै बधैया

कते टाटक दोगमे अजगर बसैया
दरद सिन्धुसँ भासि गेलै अमित नैया

मफाईलुन-फाइलातुन-फाइलातुन (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ + दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ + दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ सँ बनल बहरे-सरीम)

39

आइ एला पिया घर लए कंगना दाइ गै
लाज लागै छलै होयते सामना दाइ गै

नीन नै होइ यै यादि ओ आबि गेला जखन
आइ एला पिया काज केने मना* दाइ गै

आलु कोबी कए राख भेलै भुजीया सखी
जानलौँ आबि गेला पुरा* पहुना दाइ गै

बाजलै पायलो दोगलौ ओलती मे नुका ,
सून जे भेल छल बैसकी अंगना दाइ गै

नीक साड़ी चुनर आ बुटीदार चोली छलै
भेल हरियर मन प्रेम भेलै घना दाइ गै

दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ केर हरेक पाँतिमे पाँच बेर प्रयोग भेल अछि। ई बहरे मुतदारिक अछि।

* काज केने मना कए मतलब छल जे जाही ठाम पिया काज करै छलाह ओही ठाम सँ काज-धाज छोडि क चलि एलाह

* पुरा{जगह कए नाम}

असगर जनम लेलहुँ असगरे जी रहल
अपने भाग अपनेपर भरोसा बचल

मोनक खेतपर बजड़ा अपन खाइ छी
गलती अपन तेँए बाट काँटसँ भरल

मोजर नै सिनेहक भेल कहियो हमर
अपने तोड़ि नाता शहर मे जी रमल

दै छी दोष नेताके किए आब यौ
अपने भोट दै छी घेँट अपने कटल

लोभी छी अधम छी अमित भटकै सगर
पक्षक नै अपक्षक मोन अपने बनल

मफऊलातु-मफऊलातु-मुस्तफइलुन (दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व+ दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व +दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ सँ बनल बहरे-कबीर)

41

नेता आ गुन्डा के एकै बूझू
आगू आबू देखू जल्दी जागू

दौड़ा-दौड़ी केने लेने झोरी
लूटै टाका मागै वोटो देखू

कारी केने टाका गाँधी बाला
कूदै झूठे भ्रष्टाचारी सोचू

बोली खूंखार डेरेलै नेना
मारू लाठी हाथो-टाँगो तोड़ू

गाड़ी-घोड़ा भेलै खेलौना यौ
एतै हेतै जादू खेला झाड़ू

नेता नै भेलै गुन्डा मानू ने
गुन्डे भेजै छी अन्हारे देखू

वार्णिक बहर
{10 टा दीर्घ सब पाँतिमे }

पुन: जोडि लेबै नेहकँ डोर राजा जी
कनेको बहै नै जानकँ नोर राजा जी

कने आउ राजा जानि नै की भऽ जेतै यौ
कनेको नचाबू प्रेमकँ मोर राजा जी

किए सुन्न भेलौं आइ बेमौत मारै छी
कने आइ मस्तीमे करू शोर राजा जी

जमाना मिलेतै नै सुनू बैलगा देतै
अनाड़ी बुझै छै प्रेम छै चोर राजा जी

चटा देब संगे प्यार के चाशनी हमरा
अमीतो बुझू भेलै सराबोर राजा जी

हरेक पाँतिमे "फऊलुन-मफाईलुन" अर्थात (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ + ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ सँ बनल बहरे तवील)

जखन राति आएल कारी पिया यौ अहाँ मोन पड़लौ
जखन होइ घर मोर खाली पिया यौ अहाँ मोन पड़लौ

अहाँ दूर बैसल सताबैत छी साँझ-भोरे सदिखने
सनेसोँ जँ आएल देरी पिया यौ अहाँ मोन पड़लौ

बरसलै प्रथम बूँद वर्षा मिलन यादि आबै तखन यौ
विरह केर तानल दुनाली पिया यौ अहाँ मोन पड़लौँ

पिया जी जखन बहल पवना मधुर गीत गाबैत कोयल
जखन काँट मे फसल साड़ी पिया यौ अहाँ मोन पड़लौँ

जँ देखब कतौ छिपकली डर सँ बोली फुटै नै हमर यौ
जँ धड़कै हमर सून छाती पिया यौ अहाँ मोन पड़लौँ

कने आबि नेहक जड़ल भाग फेरो सँ चमका दिऔ यौ
अमित आश देखैत रानी पिया यौ अहाँ मोन पड़लौ

बहरे -मुतकारिब
{ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ 6बेर सब पाँतिमे }

चादरो फाटल सड़ल बड उठबै कखन
बाढ़ि एलै भासलै घर बनतै कखन

कोन कोना नाह भेटत मजधार मे
राति दिनकर दिन कऽ चन्ना बूझै कखन

चोरि भेलै चैन आ चाहो के अमल
देह टूटै दोष अनका देबै कखन

डाँग लागै दैब के अधगेरे जखन
पानि मान्व एक बूँदो माँगै कखन

बेचबै बेटा जँ जिनगी बचतै तखन
अमित कह ने पानि सगरो घटतै कखन

फाइलातुन-फाइलातुन-मुस्तफइलुन
{ I-U-I-I-I-U-I-I-I-I-U-I} एक बेर सब पाँति मे
बहरे-जदीद

45

भेलै इ सरकार आन्हर
कानै इ देशो भऽ असगर

कोना कहब आइ सोना
सगरो तऽ छै भेल गड़बड़

सांसद बनल हाट माछक .
नाचै असल बनि कऽ बानर

बनलै बजट लूट मचलै
कारी टका बनल सागर

मरलै कते एतऽ कोना
के करत यौ खोज एकर

पोर्नो चलै राज तऽरमे
लाजे अमित रचल आखर

{मुस्तफइलुन-फाइलातुना-I-U-I-I-U-I-I}

बहरे-मुजास

करेजक घर तऽ खोलू कने
कते छै प्रेम देखू कने

अहाँ हेबै सराबोर यौ
नगर मे आबि देखू कने

मजा एतेक छै एतऽ यौ
मना नै करब मानू कने

नयन के बाट धेने प्रथम
सिनेहक चार उतरू कने

सिहकि रहलै हमर मोनसँ धुन
प्रितक सरगम तऽ गाबू कने

मोनक अछि आश संगे मरब
सिनूरक मान राखू कने

गजल एगो अहाँ गाबि लिअ
अमित हाथो बढ़ाबू कने

हरेक पाँतिमे--ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ ह्रस्व-दीर्घ

47

कोन टोना केलकै जोगिया सदिखन करेजा हमर जरिते रहल
चोरि केने चैन होशो हमर सदिखन अनेरे उड़िते रहल

नै छलै डर एतऽ मरबाक आ नै मोन मे दर्द अंदेशा छलै
देख नवका एतऽ बहिते हवा से आब नेहक गजल मरिते रहल

भागि गेलै कोन नगरक गली मे आइ देखा कऽ सतरंगी सपन
बाट जोहैते भऽ जेतै कखन की आँखिमे नोर बड भरिते रहल

उजरि गेलै जखन कोनो उपवनक कोनटा परक गाछक फूल यौ
तखन सबटा कोयलक मधुर बोली संग दर्दक हवा उड़िते रहल

आइ खोजै छी अपन ओहि जादूगर कए फेर खेला खेलबै
अमित केने आश नेहक सदिखने भीतरे-भीतर जरिते रहल

बहरे मदीद
फाइलातुन-फाइलुन (I-U-I-I+ I-U-I) 3 बेर

48

खतम सब काज भेल हमर
स्वतंत्र मिजाज भेल हमर

कतौ जिनगी छलै धधकै
खुशी पर राज भेल हमर

पुरान जँ गाछ , मज्जर नव
अपन तऽ अवाज भेल हमर

सरस पल भेल बड दिनपर
सदेह इलाज भेल हमर

सदिखन गजल लिखैत रहब
अमित नव साज भेल हमर

बहरे-वाफिर
मुफाइलतुन U-I-U-U-I 2 बेर सब पाँतिमे

ओ बिसरि गेलै किए
प्रेम हेरेलै किए

बीच चौराहा जड़ल
राख दिल भेलै किए

आश अमृत के छलै
जहर बनि एलै किए

झुनझुना हमर समझि
आइ ओ खेलै किए

प्रेम देबी बनि कऽ ओ
नोर बोझेलै किए

नै जबाबो भेटलै
अमित दुख भेलै किए

फाइलातुन-फाइलुन (I-U-I-I + I-U-I)
बहरे-मदीद

50

घोघ हुनकर उतरि गेलै
पवन संगे ससरि गेलै

आँखि रहि गेलै खुजल यौ
रूप यौवन निखरि गेलै

टोह मे छल मोन बगुला
राशि सुन्नर उचरि गेलै

चउरचन मे चान पूजब
पावइन सब बिसरि गेलै

जेठ मे मधुमास एलै
गाछ नव दिल मजरि गेलै

मधुप केलक आक्रमण बड
काम मे सब लचरि गेलै

अंशु आशक झाँपि लेलनि
कुकुर पर जे नजरि गेलै

पाप भेलै ,घोघ ससरल
अमितके मन हहरि गेलै
फाइलातुन (I-U-U-U)
बहरे-रमल

51

ओकर मूँह लागैए कते म्लान सन
कतऽ गेलै चमक ओ पुन्मके चान सन

मौलाइल गुलाबक ठोर ओकर किए
नोराएल कारी नैन जे वाण सन

केशो नै गुहल पसरल धरा पर किए
देने पेटकुनियाँ भेल अपमान सन

टोना कोन डाइन केलकै आइ यौ
मुस्की गेल हेरा कोयलक गाण सन

दिल मे आगि लागल छै विरह के अमित
परदेशी पिया भेला अपन जान सन

मफऊलातु--- मफऊलातु--- मुस्तफइलुन (I-I-I-U + I-I-I-U + I-I-U-I)
बहरे -कबीर

आब आगिक पता पुछतै पानि ऐठाँ
नै जड़त यौ कतौ घर लिअ जानि ऐठाँ

कखन धरि लोक जड़तै चुप जानवर बनि
तोड़बै जउर से लेतै ठानि ऐठाँ

छै दहेजो तऽ महगाई कम कहाँ छै
ओझरी सोझरेतै लिअ मानि ऐठाँ

बदलतै समय सगरो नवका जमाना
नै जँ बदलत तऽ ओ मरतै कानि ऐठाँ

जे जनम देलकै हुनका बिसरलै सब
माँथ पर जनकके रखतै फानि ऐठाँ

भाइ मे उठम-बजड़ा नै आब हेतै
आइ तऽ स्वर्ग के देबै आनि ऐठाँ

आगि पर पानि नेहक हँसि ढ़ारि दिअ ने
अमित सब के मिला सुख लिअ सानि ऐठाँ

फाइलातुन-मफाईलुन-फाइलातुन
(I-U-I-I + U-I-I-I + I-U-I-I)
बहर-असम

अपन जीत होइत देखिते रूप लागै यै
सए रास आशा देखिते प्रेम जागै यै

हजारो कड़ी संगे जुड़ैए जँ एलौँ यै
डऽरो मोन मे जे छल अहाँ संग भागै यै

अहाँ चान छी वा छै सुमन संग नै परतर

अमी मीठ सन बोली अहाँ के तऽ लागै यै

जँ हम देख लै छी प्रेम के मुँह सनक पोथी
सबालो बनै जल्दी दिमागो तऽ भागै यै

बरसतै जँ सदिखन नेह रस हमर घर मे यै
सराबोर हेतै अमित आशा इ जागै यै

फऊलुन-मफाईलुन
बहर-तबील
(U-I-I + U-I-I-I)

54

बीतल दिनक ओ प्यार कतऽ चलि गेल यौ
नेहक जुड़ल ओ तार कतऽ चलि गेल यौ

जै तालमे हम भासि गेलौँ सादिखने
मचलैत छल ओ धार कतऽ चलि गेल यौ
फूलोसँ कोमल घेँटमे लटकैत जे
दू बाँहिके ओ हार कतऽ चलि गेल यौ

सब अंग छै गाथा कला के कहि रहल
मधुमास के श्रृंगार कतऽ चलि गेल यौ

बदलैत मौसमके मजा नै आब छै
जेठक तपल ओ जाड़ कतऽ चलि गेल यौ

छै कल्पनामे बनल रचना मात्र ओ
छै अमितके ओ प्यार कतऽ चलि गेल यौ

मुस्तफइलुन
दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ
बहरे-रजज

55

भेटल अहाँके संग हमरा जहियेसँ
जिनगी हमर लेलक करोटो तहियेसँ

हम एकरा की कहब छल एहन भाग
बैसल छलौँ हम बाटमे दुपहरियेसँ

गेलौँ शिखरपर भेल जे एगो स्पर्श
जुड़ि गेल श्वास प्राण संगे तहियेसँ

छी ग्यानके पेटी अहाँ जादू गजल
शाइरक कोनो कलम लागै हँसियेसँ

हम भेल नतमस्तक लिखब कोना शब्द
शाइर अमित छी संग हमरा जहियेसँ

मुस्तफइलुन-मुस्फइलुन-मफऊलात
(I-I-U-I +I-I-U-I + I-I-I-U)
बहरे-सरीअ

बेचि खेलक इमानो बजारमे
नाचि रहलै इ दुनियाँ अन्हारमे

के अपन आब छथि एत से कहू
नेह सबटा त बेचल हजारमे

भोर किछु राति किछु भेष सब घरै
के असल छै इ लोकक पथारमे

भाइ नै भाइ के रहल आब यौ
लोक चुटकी लऽ रहलै दरारमे

बेचि एलै जखन रोटी एक कऽर
अमित नै देख आशक सचारमे
(I-U-I +I-U-I +I-U-I + I-U)

57

सदिखन अहीँ धेआनमे रहलौँ हमर
कखनो अहाँ धेआनमे रमलौँ हमर

शोणित अपन देलौँ जड़ा लिखलौँ गजल
की पाँति एको प्रेममे रचलौँ हमर

नै थाह भेटल कोन घर छै प्रेम यै
कहने छलौँ जे झूठ सन कहलौँ हमर

छी कल्पनामे रूप फोटो छापने
की दिल सँ एक्को बेर मन गमलौँ हमर

छी ठेठ हम भाषा हमर बूझलौँ कहू
की अमित नेहक भाव के पढ़लौँ हमर

मुस्तफइलुन
I-I-U-I तीन बेर सब पाँति मे
बहरे-रजज

58

उठलै करेजामे दरदिया हो राम
बदलल पियाके जे नजरिया हो राम

डूबा कऽ नेहक तालमे संगे संग
लेलक बदलि अपने डगरिया हो राम

मधुमास लागै आब सौतिन हरजाइ
बेचैन केलक बड़ड अन्हरिया हो राम

छै फूल पसरल सेज काटै सब अंग
गरमी दऽ रहलै यै चदरिया हो राम

कोना कऽ सम्हरत मन समझमे नै ऐल
बड़ड अमित तड़पाबै बदरिया हो राम

मुस्तफइलुन- मुस्तफइलुन-मफऊलात
बहरे- सरीअ

59

किए एखन मोन हमर शाइर बनल छै
लिखल जेकर नाम ओ एखन कटल छै

बनाबी हम रूप जे शब्दक नगरमे
नगर ओकर नैनके लागै जहल छै

गजल जेहन हम लिखै सबदिन छलौँ से
कहाँ हमरा मोनमे ओहन गजल छै

दिनक काटै रौद रातिक चान धधकै
बहर मारै जान पथ काँटक बनल छै

कखन हारब जीवनक अनमोल पारी
अमित जा धरि छी करै शेरक कहल छै

मफाईलुन-फाइलातुन-फाइलातुन
बहरे - सरीम

60

खाली हुनक बाते छलै फूल सन
बाँकी बचल सबटा छलै शूल सन

खंजर बनल नैनक कमल कोर छल
ठोरक तऽ लाली आगि जड़ मूल सन

बदलल किए सब आइ से जानि नै
छल नेह काँटक पैघ टा कूल सन

छै आब सपना देखब व्यर्थ सन
भेलै कहाँ ओ हमर अनुकूल सन

जाएब हम पागल भऽ कहलौँ सते
छै अमित सब किछु भेल निर्मूल सन

(I-I-U-I + I-I-U-I + I-U-I)

पाहुन कने अटकि जाऊ गप लाख टाकाक अछि यौ
हमरा कने हाथमे लेने हाथ कहबाक अछि यौ

जाएब चलि कोन सदिखन रोकब अहाँ रूकबै जे
काजर कने नैनमे अपने लग लगेबाक अछि यौ

श्रृंगार छी हमर सबटा जानम अहाँ जानि लिअ यौ
चुटकी सिनूरक पिया आ टिकुली सटेबाक अछि यौ

परदेशमे जाइ छी कहिया भेँट हेबै अहाँ यौ
जी भरि कऽ एखन तऽ नेहक सोना तपेबाक अछि यौ

आँचरसँ बान्हब करेजामे साटि सब किछु कहब हम
हम हँसब आ अमित राजाके बड़ड हँसेबाक अछि यौ

मुस्तफइलुन-फाइलातुन { दू बेर सब पाँतिमे}

बहरे-मुजस्सम वा मुजास

मोनसँ पढ़लकै लिखलकै पोथी हजार ओ
तैयो भटकि रहल छै बनि बेरोजगार ओ

नै छै एतऽ कारखाना जाएत लोक कतऽ
सपना टूटि गेल भीखे माँगत बजार ओ

दोसर ठाम पेट काटिकऽ कोना रहत बचल
छै पहिलेसँ देह केने साँसे उघार ओ

बदलल लोक आब अपना अपनी तऽ होइ छै
भेटल रोजगार नै भेटै नै उधार ओ

फहराएत सगर झंडा ताकत तऽ छै बचल
पर की करत बनल छै सब अपने बिहार ओ

सोचै छी भऽ जाइ एखन एहन सन प्रलय
नै बचतै अमित इ भूखल देहक पथार ओ

मफऊलातु-फाइलुन दू बेर

63

खिड़कीसँ सीधे देखै छलौँ हम चान
घन तिमिर मोनक छाँटै छलौँ हम चान

हेतै अपन फेरो भेँट ओतै जा कऽ
तेँ जागि आशा लगबै छलौँ हम चान

दिन भरि समाजक पहरा कतेको नयन
छवि संग तोहर भटकै छलौँ हम चान

लागै तरेगण लोचन पलक झपकैत
बनि मेघ घोघट लागै छलौँ हम चान

शुभ राति फेरो भेटब अमिय नेहक लऽ
सब दिन अमित नव आबै छलौँ हम चान

मुस्तफइलुन-मफऊलातु-मफऊलातु
{दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व}
बहरे-सलीम

टिटही टेकलक अकासके
असगर जीत लेत तासके

आँङुर एक के तऽ काज छै
छै बलगर दमगर बासके

एहन लोक आश तोड़ि दै
बाबा बनल मोह पाशके

छै मानव जँ राम काज की
पाथर पूजि दिन उपासके

केवल कर्म मात्र अपन छै
आ छै अमित उपज चासके
दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-

पूसक गाछी जकाँ लागैए गाम हमर
बंजर परती जकाँ लागैए गाम हमर

बर्फक ढेला सँ छाँपल नै जीयल तऽ मरल
भूतक कोठी जकाँ लागैए गाम हमर

छै महिला बूढ़ नेना थाकल गाम मात्र
बासी रोटी जकाँ लागैए गाम हमर

नवतुरिया दौड़ लगबै शहरक पानि लेल
हारल पारी जकाँ लागैए गाम हमर

कहिया सरकार जागत हेतै अमित भोर
कारी मोती जकाँ लागैए गाम हमर

दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व

करेजक नस मांसके पाथर बना लिअ
गरीबक दुख दर्दके मोहर बना लिअ

मरै छै बेटी जँ कोखे दिन दहारे
पवनपुत्रक धामके कोबर बना लिअ

सिनेहक बीया असंभव भेल रोपब
मनोजक नद मोनके विषधर बना लिअ

कलह करबै भूख नेता देखियौ ने
जवानक सब बातके सोँगर बना लिअ

अपन हेतै देश संगे प्रात हेतै
कटारक कर अमित के भोथर बना लिअ

मफाईलुन-फइलातुन-फइलातुन
बहरे -सरीम

रावणक मुत्तीसँ लुत्ती नै मिझा सकैए
कंठ जेना ओस चाटि कऽ नै भिजा सकैए

आंत जुन्ना जखन बनि गेलै भुखे पियासे
छोट सरकारी मदति भुख नै भगा सकैए

गेल गामक गाम जड़ि सुड्डाह भेल कोठी
ठोर मुस्की दैत हाथो नै उठा सकैए

पाइके छाहरि बिछौना पर जँ सुतल नेता
दर्द लोकक ओकरा कोना जगा सकैए

आब महगाई लऽ रहलै आइ जीब कोना
अमित कागज नै गजल कोना लिखा सकैए
2122-2122-212-122 (

किछु बात एहन जे कना गेल हमरा
बिसरल दरदिया जे जगा गेल हमरा

छल रौदमे अभरैत ओ चित्र केकर
शाइद चिन्हारे पर जड़ा गेल हमरा

छल मोनमे नै कहब ककरो दरद हम
चर्चा हुनक सुनिते बजा गेल हमरा

नै छी नशेरी छै नशा विरहके यौ
बहलै इयादक झर पिया गेल हमरा

देखल जखन फूटैत बड़ड बमक गोला
रोआँ जड़ल देहक घमा गेल हमरा

चाहै छलौं कोनो रचब गजल नेहक
पर अमित नोरक धुन लिखा गेल हमरा

मुस्तफइलुन-मुस्तफइलुन-फाइलातुन

हमर नेहक सजा जिनगी जड़ा देलक
गीत दर्दक बना जिनगी कना देलक

छै अनचिन्हार अपने नाम एखन यौ
खेल झूठक जमा जिनगी हरा देलक

नोर बहतै तऽ हमरे पर हँसत दुनियाँ
कसम झूठे गना जिनगी लिखा देलक

जहर के प्रेम मे खूनो जहर भेलै
दाँत विरहक गड़ा जिनगी विषा देलक

गाम उजड़ल शहर कानल हँसल जतऽ ओ
भवर एहन फँसा जिनगी बझा देलक

नै मवाली अहाँ हमरा कहू देखिकऽ
नेह पागल बना जिनगी डरा देलक

जीब कोना बचल जिनगी कहू एखन
अमित मौतसँ सटा जिनगी मुआ देलक

फाइलातुन-मफाईलुन-मफाईलुन
बहरे-मुशाकिल

आँचरक छाँव बिसरल नै आब जेतै
अंङुरी छुटल टहलल नै आब जेतै

देखलौं माँ जखन दर्द वाण सहलैं
दर्द दोसरक देखल नै आब जेतै

गीत तूँ तूँ गजल आनंदक लहर छैं
कात सुरसरिक छोड़ल नै आब जेतै

धैर्यके बानगी माँ तूँ एहि जगमे
नेह कैलाश बहकल नै आब जेतै

डाँट तोहर तऽ देखेलक बाट हमरा
तोर छवि छोड़ि भटकल नै आब जेतै

हमर अपराध हेबे करतै बहुत माँ
रूसलौं माँ तऽ चहकल नै आब जेतै

फाइलातुन-मफाईलुन-फाइलातुन

बहरे-असम-

भूख जाड़ल लोक कोना हँसि सकैए
नोर कानल लोक कोना हँसि सकैए

देखने जे होइ अर्थी अपन लोकक
दर्द जागल लोक कोना हँसि सकैए

लोभ जागल मोह मोहल लोक हँसतै
श्वास काटल लोक कोना हँसि सकैए

जहर बनबै जे कहाँ ओ नोर बहबै
जहर चाटल लोक कोना हँसि सकैए

दर्द दै जे छी कने अपने लऽ देखू
चोट लागल लोक कोना हँसि सकैए

राखि हमरो नोर अपना आँखि सोचू
अमित मारल लोक कोना हँसि सकैए
फाइलातुन
I-U-I-I तीन बेर सब पाँतिमे
बहरे-रमल

हमर मुस्कीसँ हुनका आगि लागल यौ
हुनक कनखीसँ तरका आगि लागल यौ

चुनावक गीत भाषण भरल झूठक छै
अपन मुँह कहब किनका आगि लागल यौ

उखाड़ब लाश गड़लाहा हमर मरजी
अहाँ बाजब तऽ बड़का आगि लागल यौ

नगरमे बनल मुद्दा भ्रूण हत्या छै
इ वर्फक सर्द मटका आगि लागल यौ

कहत भोरे दऽ पेट्रोलक समाधी ओ
जड़ल छाउर सँ बड़का आगि लागल यौ

दुखाइत नस अपन हाथे तऽ नीके छै
पड़ल दोसर सँ पटका आगि लागल यौ

मिझा देलौँ पहिल सब आगि घी ढारिकऽ
"अमित" छै फेर नवका आगि लागल यौ

मफाईलुन
U-I-I-I तीन बेर सब पाँति मे
बहरे -हजज

बेटा अपन मुर्खके सोटासँ हम अकछ छी
बाबाक फूटलहबा लोटासँ हम अकछ छी

पेट्रोल कखनो तऽ कखनो गैस सब्जी महग
काला बजारी करै कोटासँ हम अकछ छी

बेटी कपारपर छै चिन्ता इ सदिखन बनल
कनियाक नेहक भरल मोटासँ हम अकछ छी

छै आगि धरती बनल नै पानि आकाश मे
पीबैत कारी धुआँ मोटासँ हम अकछ छी

दै यै भगा काज छोड़ा जीब कोना बचब
छै खसल टाकाक लंगोटासँ हम अकछ छी

रचना करै छी तऽ खर्चा होइ यै नै मुदा
अतिथी अमित एतऽ दस गोटासँ हम अकछ छी

मुस्तफइलुन-फाइलुन दू बेर
बहरे-बसीत

बिसरलौँ जग पिबै छी बोतल शराबक
मनक मारल चुमै छी बोतल शराबक

हमर छै जीत तड़िखानामे पियाबू
अपन नामे लिखै छी बोतल शराबक

हमर छै जान ई अंगुरक पानि नै छै
बनै शोणित किनै छी बोतल शराबक

शहर के कोन मैखान जतऽ पिलौँ नै
जहर दर्दक कहै छी बोतल शराबक

गिलाससँ आब पल भरि दोस्ती कऽ देखू
घर स्वर्गक रहै छी बोतल शराबक

जन्म भेलै इयादक तहियेसँ झूमैँ
अमित संगे रखै छी बोतल शराबक

मफाईलुन-मफाईलुन-फाइलातुन

बहरे-करीब

चल लिखल जाए कोनो शराबी गजल
नब रचल जाए दर्दक कटारी गजल

भरि ले कलममे स्याही शराबक आइ
अंगुरक जऽलमे घोरब गुलाबी गजल

बहुते चलै छै ओकर सबालक नजर
चल आइ भेजब पहिलुक जबाबी गजल

दारूसँ जड़बै छी हम जुआनी अपन
सबके पिया दी एखन हजारी गजल

छै नाम ओकर दोसर नशा के नगर
तैँ जाइ छी मैखाना सलामी गजल

लागै गिलासो एखन नशामे गऽजब
छै अमित कोनो प्रेमक कहानी गजल

मुस्तफइलुन-मफऊलातु-मफऊलातु

बहरे-सलीम

76

नै जीयत शराबक नशा लागल लोक
कोना हँसत कोनो दुखक खेहारल लोक

काठी फेकबै आगि उठतै बोतलसँ
नै रहतै जवानी अपन जाड़ल लोक

के कानत कतौ आन लेए कऽह एतऽ
नै छै समय ककरो अपन भागल लोक

दै छै साँस कखनो अपन धोखा आब
एहन नेहमे छै किए पागल लोक

जड़तै एक दोसर सँ जिनगी मे जखन
कटतै घैँट अपने सबर हारल लोक

क्षण भरि के नवल दोस्त नै चाही आब
हमरा अमित चाही अपन झाड़ल लोक

मफऊलातु-मुस्तफइलुन-मफऊलातु

बहरे-हमीद

77

जवानीके शराबसँ घोरि देखू ने
जँ चाही आगि छाती बोरि देखू ने

कतौ छै बाँझ जिनगी आ कतौ टूअर
अपन गामसँ तऽ नाता जोड़ि देखू ने

बचल छै किस्त जिनगी रोग मे कोना
गरीबक टोल गाड़ी मोड़ि देखू ने

कनक कोठी जड़ल रावणक जानै छी
अपन मोनक अहं के फोड़ि देखू ने

कने हँसियौ मनुख जीवन जँ अछि भेटल
अमीरी के नशा सब छोड़ि देखू ने

मफाईलुन
U-I-I-I तीन बेर-
बहरे- हजज

दुख जिनगीक मेटाबऽ एलै नव अंशु
बिसरल बाट देखाबऽ एलै नव अंशु

टूटल खसल घर जड़ल दाही रौदीसँ
छप्पर आश जोड़ाबऽ एलै नव अंशु

हेराएल मुस्की नयन नोराएल
पाथर ठोर मुस्काबऽ एलै नव अंशु

सूतल नेह मातृत्व मौलाइल सगर
प्रेमक ओस चमकाबऽ एलै नव अंशु

टूटल तार नेहक कतौ देखत आब
प्यारक डोर नमराबऽ एलै नव अंशु

हेतै अपन मिथिला अपन राजक भोर
मन मिथिलाक धड़काबऽ एलै नव अंशु

मफऊलातु-मुस्तफइलुन-मफऊलातु

बहरे- हमीद

छै चिन्हल पथ तैयो भटकि गेलौँ एतऽ
बीच्चे सड़क पर फँसि लटकि गेलौँ एतऽ

ढहि गेल सबटा आशके नवका महल
कपड़ा सड़ल सदृश फसकि गेलौँ एतऽ

हम कल्पना के लोकमे केलौँ भ्रमण
सपने जकाँ एखन ठमकि गेलौँ एतऽ

प्रेमक तऽ परिभाषा कहाँ कखनो पढ़ल
निष्ठुर भऽ गेलौँ तँ सरकि गेलौँ एतऽ

अपने सँ बतियाइत रहै छी सदिखन तऽ
अपनेक छी मारल सनकि गेलौँ एतऽ

जिनगी कहाँ ककरो अपन कखनो भेल
पातर कमानी झट लचकि गेलौँ एतऽ

पतझर जकाँ झड़ि गेल छै सबटा अंग
जतऽ अमित भट्ठी मे झरकि गेलौँ एतऽ

बहरे सरीअ

हमर जिनगी जेल लागै बंद घऽरमे
सटल जीवन गेल पग पग गरम छऽड़मे

बालु सदिखन उड़ल जिनगी के सतह पर
भटकि गेलौँ जखन समाजक पैघ चऽरमे

चाहलौँ जतऽ रोपि नामक लेब उपजा
ओतऽ आशा बझल दमनक तेज हऽरमे

नै अपन छै एतऽ आ नै मानलक अछि
एसगर छी पड़ल झूठक चार तऽरमे

कटत कोना रैन जिनगी बचत कोना
पैघ लागल छै ग्रह बड़ एक कऽरमे

नेह नै भेटल मुदा दर्दक उपज बड
अमित जिनगी चढ़ल फाँसी यैह डऽरमे

बहरे रमल

बसलौँ अहाँ जखन मनमे हमरा चमकि गेल जिनगी
अनमोल नेहक उड़ल खुशबूमे महकि गेल जिनगी

माधुर्य माँखैत खुजलै जखने कमल ठोर रानी
लवणी सँ छलकैत ताड़ी बूझू छलकि गेल जिनगी

गाबी अहाँ गीत मोने मोने जँ तैयौ गजब धुन
मुस्की दऽ देलौँ चहटगर अमृत झमकि गेल जिनगी

नीरीह जानबर बनि नैनक मारि खेलौँ सदिखने
फूले छलै बाण नैनक तेँए धड़कि गेल जिनगी

सगरो अहाँ के लिखल छवि डूबल कलम नेहमे यै
गाबै अमित गजल लिखलक देखू दमकि गेल जिनगी

बहरे मुजास

82

युग विज्ञानक शोध एखन कऽ देखै छी
अपन मन परबोध एखन कऽ देखै छी

रहत जगमे अमर मानव मरत दानव
नव मशीनक शोध एखन कऽ देखै छी

भाग बनतै मात्र दस खा कऽ रसगुल्ला
शक्ति के हम बोध एखन कऽ देखै छी

सत्त सी ओ टू बनल झूठ आँक्सीजन
कार्बनक अबरोध एखन कऽ देखै छी

डाहि हम संस्कार संस्कृति मुस्कै छी
मान लेल क्रोध एखन कऽ देखै छी

देश चलबै छी तऽ सब राज के देखू
जोड़ि कर अनुरोध एखन कऽ देखै छी

बहरे-कलीब

83

गजल छी गीत छी
छी अहाँ प्रीत छी

रंग सभ भरल तन

मीठ छी तीत छि

आड़ि नै बनल छै
सब दिशक जीत छी

शान छी जान छी
छी अहाँ मीत छि

फाइलुन
212 - 212
बहरे मुतदारिक

84
कते दी टी आर पी नेहक प्रोग्रामक कहू ने
छलैए छल* मात्र केलौँ किए ई नाटक कहू ने

छपल छल फोटो अहाँ के करेजक नव कैमरा मे

गड़ल सबटा राज कागतक पसरल राखक कहू ने

जखन हँसतै हमर जिनगीक साँसो नोरपर हमरे
तखन पूछब हाल सबटा अहाँ के बाटक कहू ने

बजारक छै भाव गरमे मुदा नेहक बहुत कम छै
किए नेहक कूंड मे ढारलौँ घी विरहक कहू ने

सगर हाथो के मिलेनाइ बिन बातक ठीक नै छै
"अमित" के की करत ठेकान कोनो मनुखक कहू ने

मफाईलुन-फाइलातुन
1222 - 2122 दू बेर
बहरे मजरिअ

85
आशक डोर टूटल हार भेले बुझू
डरलौँ पूसमे बड जाड़ भेले बुझू

चलबै बाटपर रोड़ा तऽ भेटत बहुत

ठेससँ डरब बेरा पार भेले बुझू

गाछो घर बनै टापू जँ निर्जन रहल
खेबै मांस नै फलहार भेले बुझू

कतिआएल लोकक पूछ नै आब छै
जोहब बाट जतऽ उद्धार भेले बुझू

बेसी नीक नै छै सत्यवादी बनल
बदलब नै तऽ कारागार भेले बुझू

मफऊलातु-मफऊलातु-मुस्तफइलुन
2221 2221-2212
बहरे कबीर

86
दर्दक छोर नै भेटै कतौ हमरा तऽ
आँखिक नोर नै रूकै कतौ हमरा तऽ

जेठक रौद झड़काबै मनक विश्वास

विरहक जेठ नै छोड़ै कतौ हमरा तऽ

कैक्टस गड़ल छल हमरा समय समयपर
फूलो आब जख्मे दै कतौ हमरा तऽ

टूटैए पहाड़ो खसल पाथर बहुत
शोणित माथ के फोड़ै कतौ हमरा तऽ

हँसलै लोक देखाबा करै नोरक तऽ
"अमितक" घेट के घोटै कतौ हमरा तऽ

मफऊलातु

2221तीन बेर

87
गजल

नेह सागरमे किनारा जँ नै हेतै
संग भरि जीवनक चिन्ता जँ नै हेतै

सात जन्मक बनल बंधन तऽ नै टूटत
डोर विश्वासक इ आधा जँ नै हेतै

हाल हमरा सनक ककरो तऽ नै हेतै
फेर आँखिक ओ इशारा जँ नै हेतै

भीड़ लोकक नै बढ़त मरत नै बेटी
श्राद्ध के अधिकार बेटा जँ नै हेतै

चाह ककरो तम अन्हारक तऽ नै रहितै
राति मे लाखौँ सितारा जँ नै हेतै

हमर नोरक गजक नै ठोर पर सजतै
पत्र नेहक "अमित" सादा जँ नै हेतै

फाइलातुन-फाइलातुन-मफाईलुन
2122-2122-1222
बहरे-- कलीब

88
कारी मेघ नव उमेदक भोर केलक
कोमा पड़ल मनुख जेना सोर केलक

उधियाइत पवन सटै देहसँ तऽ लागै

आनत पत्र पाहुनक तँ शोर केलक

जनता लाख झूठ अश्वासनसँ बेदम
देशक लेल मेहनत जी तोड़ केलक

मोनक मैल नै करै छै साफ गंगा
कारी चाम पोति पौडर गोर केलक

दोस्ती मात्र लेन देनक लेल एखन
पार्टी आ चुमाउनक सब जोड़ केलक

प्रेमक सजल नव उमेदक खंडहर जतऽ
ओतै "अमित" गजल नोरे नोर केलक

मफऊलातु-फाइलातुन-फाइलातुन
2221-2122-2122

89
किछु बात एहन भेल छै
घर घर तऽ रावण भेल छै

बम फोड़ि छाउर देश छै

जड़ि देह जाड़न भेल छै

प्रिय नै विरह जन्मै बहुत
सजि दर्द गायन भेल छै

जिनगी भऽ गेल महग कते
झड़कैत सावन भेल छै

दस बात सूनब की "अमित"
सब ठाम गंजन भेल छै

मुतफाइलुन
11212 दू बेर
बहरे -कामिल

90
आखर जखन रूपक लिखल
उपमा सजल फूलक लिखल

आदर्श छी रूपक बनल

काजर नयन कातक लिखल

सरगम अहाँक स्वर सजल
मुस्की नगर तानक लिखल

कहलौँ करेजक सब कहल
किछु बात हम राजक लिखल

चमकैत नभ मे छी चान
तारा गजल हाटक लिखल

मुस्तफइलुन-मफऊलातु
2212-2221
बहरे- मुन्सरह

हजल

1
हरदी-चुन-करीखा लगाउ हुनक मुँहपर
चुगला सनक फोटो बनाउ हुनक मुँहपर

सड़ल फाटल चट्टी वाला बोरा सँ अंगा बनाबू
एकाध लोइया कादो लगाउ हुनक मुँहपर

बेंगक माला चाहे जुत्ता कए हार सँ हो स्वागत ,
करिकबा कुकुर हुलकाउ हुनक मुँहपर

होली छै तऽ शराब हेबाक चाही ने हिनका लेल ,
पिल्लू वाला महुआ बरसाउ हुनक मुँहपर

कत्तौ सँ एकटा बत्तूपकैर कए लेने आबू यौ
जनतासँ बारह बजबाउ हुनक मुँहपर
वर्ण-18

2

कनियाँ कए मारिसँ सब त्रस्त भेल छै
हकमि चलै जेना भेकम भेल रेल छै

चारि बजे भोरे पानि उझलि उठाबथि ,
भऽ जाइ छी स्टार्ट बुझू पानि नहि तेल छै ,

चाहक जोगार एगो दोसर हाथ झाड़ू
किचेन कए काज सँ कहू कोन मेल छै

स्कुलक दौड़ा सँग सब्जी बैंक बजार जेबै
जीनगी लागै यै ओलंपिक कए खेल छै

होइ साफ झाड़ू सँ बेलनाक मारि खाइ
गर्दन पर छै कैँची घर बुझू जेल छै

नैहर कए धमकी आतंकी जेकाँ लागै

बम बलास्ट सन बाजब ,जान गेल छै

पिबै छी जहर मुदा बचा लै यै ब्रत कऽ
लोकल ट्रेन जेकाँ जीनगी ठेलम-ठेल छै

लिखै छी प्रेमक गजल ओकरे डर सँ
कंठ पर चढ़ि लिखेलक वैह देल छै

मरऽ चाहै छी भाई मदद करू बताबू
अमित कतऽ लागल मृत्यु कए सेल छै
वर्ण-15

3
यदि बैसब कोठलीमे लागत बेशी रंग यै
तोड़ि कऽ केबार मोबिल लगा करब तंग यै

बनरी सन मुंह बना देब अहाँक भौजी यै
कारिका कादो लगा देब मोन हेएत चंग यै

बहिन कए कते देर नुका क रखबै यै अहाँ
बड़का शिकारी जेकाँ हमहूँ धेने छी ढंग यै

दौड़ा -दौड़ा क खत्ता में पटैक क राँगब हम
प्रेम सँ खा लिअ एकटा मिठका पड़ा भंग यै

लगबा लिअ दुनू गाल पर अबीर आ रंग
डूबि जाऊ भौजी अहाँ मस्ती में अमित संग यै
वर्ण-17

किनकोसँ उधार लेल गेल हँसी
उलटा काज क बड़का देल हँसी

करिखा - चुना लगा अपने मुंह में
अपने सँ मुर्ख बनल भेल हँसी

गदहाक भैया बनेलनि आइ ओ
मुर्खता सँ मरखाह बकलेल हँसी

कोयला लगा मंदिर धरि दौड़ला
करिया लग सभहक फेल हँसी

बजेलक जजमान पूजा के लोभ
दौड़ला खसला भेल अलेल हँसी

हाथ उठाऊ जे पैघ विद्वान छी से
अमित .लगायत आइ सेल हँसी
वर्ण-13

5

आगू नाथ नै पिछु पगहा
देखियौ कोना कूदै गदहा

होर लागल फल-फूल मे
के सब सँ बड़का बतहा

मुर्ख दिवस मुर्खक नामेँ
केरा बनि गेलै यै गदहा

बत्तीस मार्च के सम्मेलन
मुर्खीस्तान मे हेतै सबहा

पाइ कमाइ छै चारि लाख
मुदा सब्जी लेलनि दबहा

चुन्नू सुतल अपन घर
मुदा उठल जा कऽ भूतहा

मोनूआँ चढ़ल साइकिल
उठेने माँथ पर बोझहा

बीस टका मे दर्जन केरा
मुन्नू लै छै बीस मे अदहा

माँथ उठेने छलै छै गोनू
खसलै खद्दा , भेलै पटहा

चुन्नू मुन्नू गोनू वा अमित
कहू के छथि पैघ बतहा

वर्ण-10

भेल किछु बात एहन जे कना गेल हमरा
हरासंखनी कनियाँ माथ बथा गेल हमरा

ओना त छै अमावश्या सन कारी केश ओकर
मुदा ओहि मे फड़ल चोर पटा गेल हमरा

ओना नाम छै शांती मुदा घर छै माछक हाट
छऽ टा बरदक पिलवान बना गेल हमरा

फोटूये देख परान उड़ि गेल छल हमर
से माँथ पर बंदूक राखि उड़ा गेल हमरा

सब दिन कहै यै जे प्यार नै करै छेँ हमरा
जँ भागौँ तऽ सौँसे देह दाँत गड़ा गेल हमरा

माइ के बजाबे भाइ के बजाबे सब दिन ओ
चाउर दालि आँटाक भाव बता गेल हमरा

भने फूलेसरा कुमारे रहि गेल भाइ सब
अमित ओ तऽ जीते जी श्राद्ध करा गेल हमरा
सरल वार्णिक बहर
वर्ण-17

रूबाइ

1

पोखरि नै दौड़ैत नदी के धार छी
नै छी मात्र कलम सत्यक हथियार छी
छी ज्ञानक अथाह सागर मोती भरल
अपटी खेत मे उपजल बिड़ार छी

2

डेगे डेग पर विरहक गड़ल छल कंकर
परती खेत करेजक भरल छल कंकर
सबटा खाद पानि भरोसक व्यर्थ भेल
लुबधल काँट सन दर्द फड़ल छल कंकर

3

छै जागि रहल देश आ जागि रहल गाम
खेती अपन करै अपन लोक बसल गाम
जागल युवा नव शक्तिके संचार संग
बनतै मिथिला आब मैथिली पढ़ल गाम

4

सहि लेबै दर्द जँ घाव कोनो फूटत तऽ
एहिसँ बेसी दर्द जखन मीत रूठत तऽ
कोनो बोतल टूटत तऽ शोर नै हेतै
हेतै शेर तखने जखन नेह टूटत तऽ

5

कोनो मीत जखन जिनगी जड़ा दै यै
कोनो मलहमसँ नै घाव सुखा दै यै
सबटा बाग उजड़ि जाइ छै पलमे
खूनक बूँद जँ कागज पर बहा दै यै

6

खगता छै एकटा बाट बटोही के
विश्वासक मशाल जड़ेने जोड़ी के
नै प्रेमसँ तऽ लड़ि कऽ अधिकार भेटत ने
नै देतै तऽ छीनब मिथिला रानी के

7

विधनाक डाँग चलै तऽ उठल की खसल की
विपतिक बोझ खसै तऽ मरल की जीयल की
जानपर जखन पड़ै तऽ दुनियाँक होश नै
भूखसँ तड़पल लेल तरल की उसनल की

8

बाजल लाश आब पाँच काठी चाही
बूढ़ी काकी कहैए लाठी चाही
एहन अंतीमो समयमे किछु चाही
ककरो आगि ककरो खोरनाठी चाही

9

भरि राति तरेगणसँ बतियाइत रहलौँ
चन्नासँ नैन मिला लजाइत रहलौँ
रंगीन छलै वर्फ रातिक इन्द्रधनुष
नेहक लऽ गर्मी हम ठंढाइत रहलौँ

10

जे सोचसँ बाहर एहन पहेली छी
भीतर झड़ल बाहर राँगल हवेली छी
हमरासँ जुनि आश राखू जीतक आब
कछुआक तऽ नै खरगोशक सहेली छी

11

जिनगीक छोट बाटपर संगी चाही
जीबाक लेल कने छोट हँसी चाही
रान्हल अपच सुपच कर्म सदिखन भेटत
उमरक पड़ल मारि लेल लाडी चाही

12

चाही नशा एगो मीठ मुस्की संग
चाही प्रमाण तऽ इयादक हिचकी संग
भोरक नव भूरूकबा बनि जगाबू तऽ
चाही नयन वाण एगो चमकी संग

13

भेटल अहाँक संग इ गोटमिलानी छै
भासैत नाहक इ प्रेम कहानी छै
ताकत बढ़ि गेल चान धरि जाएबाक
छै जोश जीतक वा अथक जुआनी छै

14

कखनो पानि कखनो इजोत लेल अनशन
छोटसँ छोट बातसँ सगरो भेल अनशन
छै हथियार बनल जीतक गारंटी संग
राजक नीति के छै एगो खेल अनशन

15

सपना सपने रहि गेल आजादी के
लागल हथकड़ी सदिखन तऽ गुलामी के
पहिने छल विदेशक आब भेल देशक
जिम्मेदार दुनू देशक नाकामी के

16

अहाँ सन मीत सँ एतबे प्रीत चाही
जै नै बिसरि सकी एहन अतीत चाही
हारब हम मजा हमरा आएत मुदा
सदिखन अहाँक सब मोड़ पर जीत चाही



अमित मिश्र, गाम-करियन, जिला-समस्तीपुर, पिता-नवीन कुमार मिश्र, माता-विभा देवी, जन्म-11/01/1993
email--amit11193@gmail.com मोबाइल- 9122105183